UNIVERSITY OF RAJASTHAN
JAIPUR

SYLLABUS

3/4 Yrs. B.A. Sanskrit

V & VI -Semester

Session - 2025-26

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.– संस्कृत वर्ष 2025–26

कार्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत साहित्य के अध्ययन करने से विद्यार्थी की साहित्य के प्रति रूचि होगी। स्नातक स्तर पर पाठ्यक्रम VI सेमेस्टर में विभाजित किया गया हैं जिसमें प्रत्येक सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में अध्ययन सामग्री का अपना महत्त्व है। संस्कृत साहित्य के सतत अध्ययन से भारतीय संस्कृति एवं धर्म से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान उसे प्राप्त होगा जिसकी युवा वर्ग को महती आवश्यकता है। संस्कृत साहित्य में निहित दर्शन एवं अध्यात्म का ज्ञान भी वह इसी प्रोग्राम से प्राप्त कर सकेगा। विश्व विख्यात पुस्तक गीता के अध्ययन से उसके जीवन की समस्याओं से भी मुक्ति प्राप्त हो सकती है क्योंकि गीता मनोवैज्ञानिक विषय का भी ग्रन्थ है जो पाठक को अहंकार और अवसाद से मुक्त करने में समर्थ है। भाषा का मूल एवं विश्व का वैज्ञानिक ग्रन्थ पाणिनी की अष्टाध्यायी (लघुसिद्धान्तकौमुदी) के अध्ययन से वह व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर शब्दोत्पत्ति एवं शब्द निर्माण का ज्ञान कर सकेगा। वैदिक वाङ्मय के साथ–साथ उपनिषदीय तत्त्वों का अध्ययन इसमें निहित है। भारतीय दर्शन का परिचय हो सकेगा, मनुस्मृति व याज्ञवल्क्य स्मृति से अध्ययन से प्राचीन ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थी में ब्रह्मचर्य के गुणों का विकास होगा जो वर्तमान में नितान्त आवश्यक है। प्राचीन धर्म दर्शन के अध्ययन से वर्तमान में विद्यार्थियों में निरन्तर बढ़ रही हीन भावनाओं का निराकरण होगा। क्योंकि इस प्रोग्राम में प्रवेश लेकर वे स्वयं को श्रेष्ठ स्नातक के रूप में तैयार करेंगे।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40: होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

परीक्षा योजना –

प्रश्नपत्र	समय	पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
V-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
V-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48
VI-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
अथवा VI-Sem प्रथम	3 घंटे	120	48
VI-Sem द्वितीय	3 घंटे	120	48

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए. (संस्कृत) वर्ष 2025–26
पंचम सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
Paper Code-SAN-75T-351

अलंकारशास्त्र

समयः 3घण्टे **अंकः 120**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य. स्नातक स्तर में संस्कृत के अध्ययन से विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व की अन्य भाषाएँ जब सांकेतिक स्वरूप मात्र थी उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर पंचम सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें संस्कृत अलंकार शास्त्र के जुड़े विषयों का समावेश किया गया है। अलंकार शास्त्र के अध्ययन से काव्य के स्वरूप के सम्बन्ध में प्रचलित विभिन्न उद्भावनाओं का ज्ञान छात्रों को होगा जिससे उसकी चिन्तन शक्ति में वृद्धि होगी।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40ः होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद / निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अंक– विभाजन

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघूत्तरात्मक प्रश्न	'अ' भाग के अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	'ब' भाग के अंक	अंकों का योग
1.	काव्यादर्श (प्रथम परिच्छेद)	03 लघू.	06	2 अ 2 ब	7+7 = 14 10	06+24 = 30
2.	काव्य मीमांसा (1–5 अध्याय)	02 लघू.	04	3 अ 3 ब	8+8 = 16 10	04+26 = 30
3.	चन्द्रालोक (सम्पूर्ण)	02 लघू.	04	4 अ 4 ब	8+8 = 16 10	04+26 = 30
4.	अलंकार शास्त्र का इतिहास	03 लघू.	06	5 अ 5 ब	7+7 = 14 10	06+24 = 30
	कुल	**1(10)**	**20**		**100**	120

प्रश्न पत्र निर्माता के लिए अनुदेश (निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न)

Unit- I काव्यादर्श (प्रथम परिच्छेद)

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 06 अंक
02 अंक प्रति प्रश्न निर्धारित है।

भाग ब

2 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 7+7=14 अंक
प्रत्येक व्याख्या के लिए 07 अंक निर्धारित है।
2 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है 10 अंक

Unit- II काव्यमीमांसा (1–5 अध्याय)

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक
02 अंक प्रति प्रश्न निर्धारित है।

भाग ब

3 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8=16 अंक
प्रत्येक व्याख्या के लिए 08 अंक निर्धारित है।
3 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है 10 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Unit- III चन्द्रालोक (सम्पूर्ण)

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

प्रत्येक के 02 अंक निर्धारित है।

भाग ब

4 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8=16 अंक

प्रत्येक व्याख्या के लिए 08 अंक निर्धारित है।

4 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है 10 अंक

Unit- IV अलंकार शास्त्र का इतिहास

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 06 अंक

प्रत्येक के 02 अंक निर्धारित है।

भाग ब

5 (अ) 04 प्रश्नों में से 02 प्रश्न पृष्टव्य है। 7+7=14 अंक

5 (ब) 02 टिप्पणियों में से एक टिप्पणी पृष्टव्य है। 5+5=10 अंक

सहायक पुस्तकें

1– काव्यादर्श – धर्मेन्द्रकुमार गुप्त, मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली।

2–काव्यादर्श – नरसिंहदेव शास्त्री – मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली।

3– काव्यादर्श – रणवीरसिंह –ओरियन्टल बुक डिपो, दिल्ली

4– काव्यादर्श – आचार्य के.डी. शास्त्री, ओरियन्टल वाराणसी–दिल्ली

5– काव्यमीमांसा – नारायण शास्त्री खिस्ते

6– काव्यमीमांसा – केदारनाथ सारस्वत

7– काव्यमीमांसा – मधुसूदनी व्याख्या – चौखम्बा ओरियन्टल

8– काव्यमीमांसा – विमला सुधा व्याख्या वाराणसी दिल्ली

9– चन्द्रालोक – सुबोधचन्द पंत

10– चन्द्रालोक – विमला सुधा व्याख्या

11– चन्द्रालोक – पूर्णमरासी कथा भट्टी व्याख्या

12– चन्द्रालोक – गंगाभट्ट

13– हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोयटिक्स – एस.के. डे, कलकत्ता

14– हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोयटिक्स – पी.वी. काणे – मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

15– ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ दण्डी एंड हिज वर्क्स – डॉ. डी.के. गुप्त, मेहरचन्द लक्ष्मणदास, दिल्ली

16– अलंकारशास्त्र का इतिहास – बलदेव उपाध्याय

17– संस्कृत अलंकार उद्भव और विकास – सुषमा नाग पब्लिशर्स, 11ए, जवाहरनगर, दिल्ली

18 – अलंकारशास्त्र का इतिहास – डॉ0 कृष्णकुमार

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

पाठ्यक्रम परिणाम . स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय में पाठ्यक्रम विस्तृत होने से एवं पंचम सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र से विद्यार्थी को विषय के विस्तृत ज्ञान का अवसर प्राप्त होगा। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से संस्कृत विषय में अलंकार शास्त्र के ग्रंथों में विशेष रूप से काव्यादर्श, काव्यमीमांसा, चन्द्रालोक एवं अलंकार शास्त्र का इतिहास सम्बन्धी विषयों के अध्ययन से विद्यार्थी को काव्य के स्वरूप के सम्बन्ध में भारतीय चिन्तन परम्परा का ज्ञान होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी में चिन्तन एवं तर्कशक्ति का विकास होगा जो एक विद्यार्थी के लिए अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – इस प्रश्न पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी को भारतीय अलंकार शास्त्र की परम्परा को जानने–समझने का सुअवसर प्राप्त होगा। वर्तमान भौतिकवादी युग के अशान्त जीवन में विद्यार्थी को साहित्य के स्वान्तः सुखाय के स्वरूप को जानने तथा सदाचारी मानव के रूप में प्रवृत्त होने का अवसर प्राप्त होगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2025–26

पंचम सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्न पत्र

Paper Code- SAN-75T-352

वीरकाव्य तथा पुराण

समयः 3घण्टे **अंकः 120**

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत अध्ययन से विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा में ब्रह्म एवं आध्यात्मिक ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर पंचम सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। इस प्रश्नपत्र में वीरकाव्य तथा पुराण अंतर्गत रामायण (बालकाण्ड), महाभारत, (उद्योग पर्वान्तर्गत विदुर नीति एवं शान्ति पर्वान्तर्गत – 192 अध्याय को इस धर्म पर्व) एवं विष्णु पुराण (द्वितीय एवं तृतीय अध्याय) को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इसमें प्राचीन भारतीय महाकाव्यों एवं पुराण वाङ्मय में निहित जीवन मूल्यों तथा विशेषकर आर्षकाव्यों के माध्यम से धर्म, नीति एवं जीवन मूल्यों का अध्ययन करवाया जाएगा। जो कि वर्तमान भौतिकयुगीन समाज में व्याप्त सांस्कृतिक प्रदूषण का निराकरण कर समाज में स्वास्थ्य एवं संस्कार की स्थापना का बीज बिन्दु होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40ः होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद / निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

<u>अंक– विभाजन</u>

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघूत्तरात्मक प्रश्न	'अ' भाग के अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	'ब' भाग के अंक	अंको का योग
1.	महाभारत उद्योग पर्व विदुर नीति	03 लघू.	06	2 अ 2 ब	77 त्र 14 10	624 त्र 30
2.	महाभारत शान्ति पर्व (192 वां अध्याय मोक्षधर्मपर्व)	02 लघू.	04	3 अ 3 ब	88 त्र 16 10	426 त्र 30
3.	रामायण (बालकाण्ड) (प्रथम सर्ग)	02 लघू.	04	4 अ 4 ब	88 त्र 16 10	426 त्र 30
4.	विष्णु पुराण (2 एवं 3 अध्याय)	03 लघू.	06	5 अ 5 ब	77 त्र 14 10	624 त्र 30
	कुल		**20**		**100**	120

प्रश्न पत्र निर्माता के लिए अनुदेश (निबन्धात्मक/ व्याख्यात्मक प्रश्न)

न्दपज. प **महाभारत उद्योग पर्व – विदुर नीति**

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 06 अंक

भाग ब

2 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 7+7=14 अंक

2 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

न्दपज. पप **महाभारत शान्ति पर्व (192 वां अध्याय मोक्षधर्मपर्व)**

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

भाग ब

3 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8 = 16 अंक

3 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

न्दपज. पपप **रामायण (बालकाण्ड – प्रथम सर्ग)**

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

भाग ब

4 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8 = 16 अंक

4 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

Unit- IV विष्णु पुराण

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 06 अंक

भाग ब

5 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 7+7=14 अंक

5 (ब) 02 प्रश्नों में से एक प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

सहायक पुस्तकें

1– विष्णुपुराण – वेदव्यास, गीताप्रेस, गौरखपुर

2– विष्णुपुराण – नाग प्रकाशन, नई दिल्ली

3– महाभारत (उद्योगपर्व), सुकथनकर – आलोचनात्मक संस्करण, पूने

4– महाभारत, विदुरनीति – डॉ. हरिनारायण यादव, महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा

5– रामायण (बालकाण्ड) – राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली

6– महाभारत, शांतिपर्व – भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना

पाठ्यक्रम के परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम से वाल्मीकि रामायण, महाभारत एवं विष्णु पुराण के छात्रोपयोगी अंशों के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय संस्कृति एवं जीव दर्शन को जानने में सक्षम होगा। नैतिक व्यवहार एवं भारतीय सांस्कृतिक आदर्शों के ज्ञान से विद्यार्थी अनेक दुर्बलताओं से मुक्त होगा। जिसकी वर्तमान समाज में नितान्त महती आवश्यकता है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत अध्ययन करवाये जाने वाले विषयों का समुचित ज्ञान प्राप्त कर वर्तमान की आवश्यकता सदाचारी एवं स्वस्थ जीवन की परिकल्पना को साकार कर सकेगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2025–26
षष्ठ सेमेस्टर
प्रथम प्रश्न पत्र
Paper Code- SAN-76T-353
संस्कृत साहित्य का इतिहास एवं आधुनिक संस्कृत साहित्य

समयः 3घण्टे **अंकः**
120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तर में संस्कृत विषय के अंतर्गत विद्यार्थी संस्कृत भाषा और उसके आधुनिक साहित्य से परिचित हो सकेगा। स्नातक स्तर पर षष्ठ सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें आधुनिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत अभिनव संस्कृत कथा, शिवराज विजयम्, मधुच्छन्दा एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास का विद्यार्थी अध्ययन करेगा। इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य में आधुनिक काव्यसृजन की प्रवृत्तियों एवं काव्यरचनाओं का अध्ययन कर सकेगा। साथ ही संस्कृत साहित्य के इतिहास के अंतर्गत उसको प्राचीन वैदिक वाङ्मय, महाकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य, गद्यकाव्य, नीतिकाव्य आदि के स्वरूप को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40ः होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अंक— विभाजन

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघूत्तरात्मक प्रश्न	'अ' भाग के अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	'ब' भाग के अंक	अंको का योग
1.	अभिनव संस्कृत कथा	02 लघू.	04	2 अ 2 ब	8+8 = 16 10	4+26 = 30
2.	शिवराज विजय	02 लघू.	04	3 अ 3 ब	8+8 = 16 10	4+26 = 30
3.	मधुच्छन्दा	02 लघू.	04	4 अ 4 ब	8+8 = 16 10	4+26 = 30
4.	इतिहास	04 लघू.	08	5 अ 5 ब	8+8 = 16 6	8+22 = 30
	कुल		**20**		**100**	120

प्रश्न पत्र निर्माता के लिए अनुदेश (निबन्धात्मक/ व्याख्यात्मक प्रश्न)

Unit- I अभिनव संस्कृत कथा

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

भाग ब

2 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8 = 16 अंक

2 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

Unit- II शिवराज विजय

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

भाग ब

3 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8 = 16 अंक

3 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

Unit- III मधुच्छन्दा

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 04 अंक

भाग ब

4 (अ) 04 व्याख्याओं में से 02 व्याख्या पृष्टव्य है। 8+8 = 16 अंक

4 (ब) 02 प्रश्नों में से 01 प्रश्न पृष्टव्य है। 10 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

Unit- IV इतिहास

भाग अ में 04 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है।   08 अंक

भाग ब

5 (अ) 04 प्रश्नों में से 02 प्रश्न पृष्टव्य है।   8+8 = 16 अंक

5 (ब) 02 टिप्पणियों में से एक टिप्पणी पृष्टव्य है।   06 अंक

सहायक पुस्तकें

1– संस्कृत साहित्य का इतिहास–डॉ रामजी उपाध्याय, रामनारायण बैनीमाधव, इलाहाबाद
2– अर्वाचीन संस्कृत – श्रीधर भास्कर वर्णेकर
3– मधुच्छन्दा – प्रो. हरीराम आचार्य, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
4– शिवराजविजयम् – अम्बिकादत्त व्यास
5– अभिनव संस्कृत कथा – पं. गणेशराम शर्मा

संस्कृत साहित्य का इतिहास

1– संस्कृत साहित्य की रूपरेखा – चन्द्रशेखर पाण्डेय एवं नानूराम व्यास, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2– संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास – डॉ. पुष्करदत्त शर्मा, अजमेरा बुक कं., जयपुर
3– संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. रामजी उपाध्याय, रामनारायणलाल बेनीमाधव, इलाहाबाद
4– संस्कृत साहित्य का इतिहास – श्री सत्यनारायण शास्त्री, आर्य बुक डिपो, दिल्ली
5– संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6– संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
7– संस्कृत साहित्य का इतिहास – ए.बी. कीथ, अनु. मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8– संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. उमाशंकर ऋषि, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
9– संस्कृत साहित्य का इतिहास – प्रो. राजवंश सहाय 'हीरा', चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली
10– संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली

पाठ्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र के पाठ्यक्रम विद्यार्थी को विषय के विस्तृत ज्ञान का अवसर मिलेगा। संस्कृत विषय में अर्वाचीन साहित्यिक रचनाओं एवं संस्कृत साहित्य सृजन की परम्परा सम्बन्धी विषयों की समृद्धता से विद्यार्थी का परिचय होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी में सर्जनात्मक गुणों का विकास होगा जो वर्तमान संक्रमित काल में अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी आधुनिक संस्कृत के साथ–साथ साहित्य के ऐतिहासिक पक्ष से परिचित होगा। उसके द्वारा भारतीय साहित्य सृजन के प्राचीन एवं अर्वाचीन पक्षों को जानकर अपने जीवन में साहित्यिक प्रवृत्ति का विकास होगा तथा वह समाज का मार्ग प्रशस्त करने का आधार बनेगा।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

अथवा

Paper Code- SAN-76T-354

भारतीय ज्योतिष, तिथि निर्णय एवं पंचांग परिचय

समयः **3घण्टे**

अंक–120

पाठ्यक्रम उद्देश्य –स्नातक स्तर में संस्कृत पढ़ने पर विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम एवं अन्यतम है। विश्व की अन्य भाषाएँ जब अपने विकास–यात्रा के प्रथम सोपान थी उस समय संस्कृत भाषा में अध्यात्म–ज्ञान पर चिन्तन किया जा रहा था। स्नातक स्तर पर षष्ठ सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं।जिसमें शीघ्रबोध प्रथम प्रकरण, शीघ्रबोध द्वितीय प्रकरण, फलित प्रबोधिनी, तिथि–निर्णय व पंचांग परिचय पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। ज्योतिष का त्वरित गति से 'शीघ्रबोध' कराने वाले इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण से परिचय खण्ड, अवकहड़ा व योग, क्षय मास, अधिक मास, भद्रा विचार, पंचक विचार, विवाह प्रकरण पर आदि का ज्योतिषीय ज्ञान प्राप्त हो सकेगा। द्वितीय प्रकरण में गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत आदि संस्कारों से सम्बन्धित ज्योतिषीय चिन्तन किया गया है। इसके अध्ययन से प्राचीन हिन्दू धर्म के आचार–विचार, लोक–व्यवहार को समझने का समुचित अवसर प्राप्त होगा। फलित प्रबोधिनी एवं तिथि–निर्णय व पंचांग परिचय ज्योतिष के फलित भाग पर आधारित है, जिसमें जन्मकुंडली और वर्ष कुंडली एवं पंचांग के मुख्य गणितीय विषयों को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 60 तथा पूर्णांक 150 होंगे और समय 3 घंटे का होगा।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद/ निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

अंक– विभाजन

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	प्रश्न संख्या 1 में लघूत्तरात्मक प्रश्न	'अ' भाग के अंक	निबन्धात्मक प्रश्न संख्या	'ब' भाग के अंक	अंको का योग
1.	शीघ्रबोध प्रथम प्रकरण	03 लघू.	06	02	12+12 = 24	06+24 = 30
2.	शीघ्रबोध द्वितीय प्रकरण	02 लघू.	04	03	13+13 = 26	04+26 = 30
3.	फलित प्रबोधिनी	02 लघू.	04	02	13+13 = 26	04+26 = 30
2.	तिथि–निर्णय व पंचांग परिचय	03 लघू.	06	02	12+12 = 24	06+24 = 30
	कुल	**10**	**20**	**06**	**100**	120

निबन्धात्मक/ व्याख्यात्मक प्रश्न

Unit- I भारतीय ज्योतिष, शीघ्रबोध – प्रथम प्रकरण

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । 06अंक

भाग ब

04 निबन्धात्मक प्रश्न पूछकर 02 प्रश्नों के उत्तर अभीष्ट है। (12+12) 24 अंक

Unit- II भारतीय ज्योतिष, शीघ्रबोध – द्वितीय प्रकरण

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । 04 अंक

भाग ब 04 निबन्धात्मक प्रश्न पूछकर 02 प्रश्नों के उत्तर अभीष्ट है। (13+13) 26 अंक

Unit- III फलित ज्योतिष – फलित प्रबोधिनी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । 04 अंक
भाग ब 04 निबन्धात्मक प्रश्न पूछकर 02 प्रश्नों के उत्तर अभीष्ट है। (13+13) 26 अंक

Unit- IV तिथि निर्णय एवं पंचांग परिचय

भाग अ में 03 लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे । 06 अंक
भाग ब 04 निबन्धात्मक प्रश्न पूछकर 02 प्रश्नों के उत्तर अभीष्ट है। (12+12) 24 अंक

सहायक पुस्तकें –

1. शीघ्रबोध – पं. काशीनाथ देवज्ञ, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी
2. फलित प्रबोधिनी–डॉ. विनोद शास्त्री, राजस्थान ज्योतिष परिषद् एवं शोध संस्थान, जयपुर
3. तिथि–निर्णय के प्रमुख सिद्धान्त एवं विशिष्ट तिथि पर्व निर्णय प्रकाशक–राजस्थान ज्योतिष परिषद् एवं शोध संस्थान, त्रिपोलिया, जयपुर
4. पंचांग का सामान्य परिचय, पं. शिवचरण शास्त्री एवं विकास शर्मा, प्रकाशक– राजस्थान ज्योतिष परिषद् एवं शोध संस्थान, त्रिपोलिया, जयपुर
5. विभिन्न प्रकाशित पंचागों की सहायता भी ग्राह्य है, जिसमें जयपुर पंचांग पं. दामोदर शर्मा कृत ग्राह्य है।

पाठ्यक्रम परिणाम स्नातक प्रोग्राम में बी.ए. संस्कृत विषय के षष्ठ सेमेस्टर का पाठ्यक्रम परिणाम की दृष्टि से महत्त्वपूर्णहै। इस सेमेस्टर में शीघ्रबोध प्रथम अधिकरण, शीघ्रबोध द्वितीय अधिकरण, फलित प्रबोधिनी, तिथि–निर्णय व पंचांग परिचय पाठ्यक्रम में निर्धारित है। जिसका परिणाम यह है कि पाठ्यक्रम में भारतीय परम्परा में विद्यमान विभ्नि संस्कारों से सम्बन्धित ज्योतिषीय चिन्तन, प्राचीन हिन्दू धर्म के आचार–विचार, लोक–व्यवहार तथा जन्म कुंडली और वर्ष कुंडली एवं पंचांग के मुख्य गणितीय विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी की संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त होगा जो कि सभी भाषाओं की जननी है। विद्यार्थी को इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं समाज में विद्यमान विभिन्न संस्कारों एवं लोक व्यवहार में ज्योतिष के महत्त्व का बोध होगा। यह पाठ्यक्रम रोजगारोन्मुखी है, इसमें स्वरोजगार के अवसर विद्यमान हैं।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए.(संस्कृत) वर्ष 2025–26
षष्ठ सेमेस्टर
द्वितीय प्रश्न पत्र
Paper Code- SAN-76T-355

व्याकरण, अनुवाद एवं निबन्ध

समयः 3घण्टे

अंकः 120

पाठ्यक्रम के उद्देश्य – स्नातक स्तरीय कक्षाओं में संस्कृत अध्ययन करने विद्यार्थी को गौरव का अनुभव होगा। संस्कृत भाषा और उसका साहित्य विश्व में प्राचीनतम है। विश्व के अन्य देश जब सांकेतिक भाषा से वार्तालाप कर रहे थे उस समय संस्कृत भाषा की समृद्ध वैज्ञानिक व्याकरण विश्व भाषाजगत् को आलोकित कर रही थी स्नातक स्तर पर षष्ठ सेमेस्टर के इस प्रश्नपत्र में 4 यूनिट हैं। जिसमें व्याकरण, निबंध एवं अनुवाद का अध्ययन करवाया जाएगा। व्याकरण अध्ययन से शब्द रूप की मूल उत्पत्ति का ज्ञान होने से विद्यार्थी के शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी एवं संस्कृत व्याकरण में विद्यमान वैज्ञानिकता से उसका परिचय होगा। इस प्रश्नपत्र में व्याकरण के अध्ययन को समाहित किया गया है जो कि संस्कृत भाषा के ज्ञान के लिए अत्यावश्यक है। व्याकरण अध्ययन से ही विद्यार्थी शुद्ध लेखन व उच्चारण करने में समर्थ होगा। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम में निबंध लेखन एवं अनुवाद को स्थान दिया गया है।

सामान्य निर्देश –

1. प्रत्येक सेमेस्टर में दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्नपत्र का पूर्णांक सैद्धान्तिक के साथ मध्यावधि मूल्यांकन सहित 150 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 48 तथा पूर्णांक 120 होंगे और समय 3 घंटे का होगा। इसके साथ प्रत्येक प्रश्नपत्र में 30 अंक मध्यावधि मूल्यांकन हेतु निर्धारित है। उत्तीर्णांक 40ः होगा। आन्तरिक मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के पश्चात् ही मुख्य परीक्षा में परीक्षार्थी को बैठने की अनुमति होगी।
2. परीक्षा का प्रश्न पत्र केवल हिन्दी में बनाया जाएगा। परीक्षार्थी को यह छूट होगी कि हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दे सके। यदि परीक्षक ने किसी प्रश्न विशेष के लिए भाषा का निर्देश दिया है तो उस प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में देना अनिवार्य होगा।
3. संस्कृत को केवल देवनागरी लिपि में ही लिखा जाना अपेक्षित है।
4. निर्धारित ग्रन्थ में से अनुवाद, व्याख्या, सरलार्थ एवं समालोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।
5. प्रत्येक प्रश्न पत्र में 10 प्रतिशत अंक संस्कृत भाषा में उत्तर के लिए निर्धारित है।
6. प्रश्न पत्र में कुल पाँच प्रश्न होंगे। प्रथम प्रश्न अनिवार्य होगा जिसमें 10 प्रश्न लघूत्तरात्मक होंगे जिनमें से प्रथम 5 प्रश्नों का उत्तर संस्कृत भाषा के माध्यम से देना होगा, प्रत्येक प्रश्न के लिए 2 अंक निर्धारित हैं। प्रथम प्रश्न में सभी इकाईयों से प्रश्न पूछे जायेंगे तथा शेष इकाईयों से आन्तरिक विकल्पों के चयन के साथ एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा। जिस प्रश्नपत्र में संस्कृत अनुवाद / निबन्ध पूछे गए हैं वहाँ संस्कृत में उत्तर अपेक्षित नहीं हैं।

<u>**अंक– विभाजन**</u>

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

क्र. सं.	पाठ्यवस्तु	लघूत्तरात्मक प्रश्न	अंक	निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न	अंक	अंको का योग
1.	लघुसिद्धान्त कौमुदी कृत्य प्रक्रिया एवं पूर्व कृदन्त	04 लघू.	08	2 अ 2 ब	3+3+3+3 = 12 2.5+2.5+2.5+2.5 = 10	8+22=30
2	लघुसिद्धान्त कौमुदी समास–केवल समास एवं अव्ययीभाव	04 लघू.	08	3 अ 3 ब	3+3+3+3 = 12 2.5+2.5+2.5+2.5 = 10	8+22=30
3	सिद्धान्तकौमुदी तद्धितप्रकरण–मत्वर्थीय एवं कारक प्रकरण	02 लघू.	04	4 अ 4 ब	3+3+3+3 = 12 3.5+3.5+3.5+3.5 = 14	4+26=30
4.	अनुवाद एवं निबन्ध			5 अ 5 ब	3+3+3+3+3= 15 15	30
	कुल	**10**	**20**		**100**	120

प्रश्न पत्र निर्माता के लिए अनुदेश (निबन्धात्मक / व्याख्यात्मक प्रश्न)

Unit- I लघुसिद्धान्त कौमुदी– कृत्य प्रक्रिया एवं पूर्व कृदन्त

भाग अ में 04 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 08 अंक

भाग ब

2 (अ) में 08 में से किन्हीं चार सूत्रों की व्याख्या पृष्टव्य है। 3+3+3+3 = 12 अंक

2 (ब) में 08 सिद्धियों में से चार सिद्धियां पृष्टव्य है। 2.5+2.5+2.5+2.5 = 10 अंक

Unit- II लघुसिद्धान्त कौमुदी– **समास**–केवल समास एवं अव्ययीभाव

भाग अ में 04 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है। 08 अंक

भाग ब

3 (अ) में 08 में से किन्हीं चार सूत्रों की व्याख्या पृष्टव्य है। 3+3+3+3 = 12 अंक

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

3 (ब) में 08 सिद्धियों में से चार सिद्धियां पृष्टव्य है।   2.5+2.5+2.5+2.5 = 10 अंक

Unit- III सिद्धान्तकौमुदी तद्धितप्रकरण–मत्वर्थीय एवं कारक प्रकरण

भाग अ में 02 लघूत्तरात्मक प्रश्न पृष्टव्य है।   04 अंक

भाग ब

4 (अ) में तद्धित प्रकरण में से 04 सूत्रों में से 02 सूत्रों की व्याख्या तथा चार सिद्धियों में से 02 शब्दों की सिद्धियां पृष्टव्य है।   3+3+3+3 = 12 अंक

4 (ब) में कारक प्रकरण से 08 सूत्रों में से 04 सूत्रों की व्याख्या पृष्टव्य है।

3.5+3.5+3.5+3.5 = 14 अंक

Unit- IV अनुवाद एवं निबन्ध

5 (अ) 10 में से किन्हीं 05 वाक्यों का हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद अपेक्षित है।

3+3+3+3+3= 15 अंक

5 (ब) 05 विषय देकर किसी एक विषय पर संस्कृत में निबन्ध पृष्ठव्य है।   15 अंक

सहायक पुस्तकें–

क– व्याकरण–

1– लघुसिद्धान्तकौमुदी – अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर

2– लघुसिद्धान्तकौमुदी – श्री महेशसिंह कुशवाहा

3– लघुसिद्धान्तकौमुदी –(भैमीव्याख्या), श्री भीमसेन शास्त्री

4– सिद्धान्तकौमुदी –

ख– अनुवाद

1– प्रौढ़रचनानुवादकौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

2– अनुवादचन्द्रिका, चक्रधर हंस नौटियाल

ग– निबन्ध

1– प्रबन्धप्रकाश, डॉ. मंगलदेव शास्त्री

2– प्रबन्धप्रदीप, हंसराज अग्रवाल

3–संस्कृतनिबन्धनवनीतम्,डॉ.द्विवेदी,एवंचतुर्वेदी,श्रीराममेहरा,एंड–कं.,आगरा

पाठ्यक्रम परिणाम – स्नातक स्तर पर संस्कृत विषय के इस प्रश्नपत्र में व्याकरण अध्ययन को प्रमुख विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है। जो कि विद्यार्थी को संस्कृत भाषा के स्वरूप को समझने का अवसर प्रदान करेगा। व्याकरण एवं निबन्ध सम्बन्धी विषयों की समृद्धता से विद्यार्थी का परिचय होगा। इस प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण ज्ञान से समृद्ध होगा जो परिष्कृत भाषा व्यवहार के लिए अत्यावश्यक है।

ज्ञेय परिणाम – विद्यार्थी को संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त होगा जो कि सभी भाषाओं की जननी है। विद्यार्थी में समाज के प्रति संवेदना जाग्रत होगी। उसके भाषा कौशल में वृद्धि होगी। संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा है, अतः संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कर विद्यार्थी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

वर्तमान में कम्प्यूटर ज्ञान के क्षेत्र में भी अपना श्रेष्ठ स्थान बना सकता है। जिससे उसे रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR